बी0ए0 संगीत (स्वरवाद्य) - तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम				
क्र0 सं0	**कोर्स का नाम**	**कोर्स कोड**	**अंक**	**श्रेयांक**
1	**संगीत विज्ञान**	**बी0ए0एम0आई0 - 301**	**100**	**3**
प्रथम खण्ड	**भारतीय संगीत का इतिहास, श्रुति एवं स्वर का विस्तारपूर्वक वर्णन व सांगीतिक शब्दों की व्याख्या**			
	इकाई 1 - भारतीय संगीत का इतिहास - मध्यकाल के उपरान्त से आधुनिक काल तक।			
	इकाई 2 - भारतीय संगीत में थाट पद्धति।			
	इकाई 3 - श्रुति एवं स्वर की व्याख्या प्राचीन, मध्यकालीन व वर्तमान विद्वानों के अनुसार : दक्षिण भारतीय संगीत का संक्षिप्त परिचय ।			
	इकाई 4 - मार्ग संगीत, देशी संगीत, नायक, गायक, वाग्गेयकार, पंडित, कलावन्त, गीत, गन्धर्व, गान, अविरभाव, तिरोभाव, काकु व तान।			
द्वितीय खण्ड	**राग विस्तार, जीवन परिचय एवं निबन्ध लेखन**			
	इकाई 1 - स्वर वाद्य में तन्त्रकारी व गायन शैली ; पाठ्यक्रम के रागों का परिचय, स्वर विस्तार एवं स्वर समूह के माध्यम से राग पहचानना।			
	इकाई 2 - संगीतज्ञों (उ0 विलायत खॉ, उ0 इलियास खॉ, पं0 हरिप्रसाद चौरसिया, शरन रानी व उ0 अमजद अली खॉ) का जीवन परिचय।			
	इकाई 3 - संगीत सम्बन्धी विषयों पर निबन्ध।			
तृतीय खण्ड	**स्वरलिपि व ताललिपि में लिखना**			
	इकाई 1 - पाठ्यक्रम के रागों में मसीतखानी गत(तोडों सहित) को लिपिबद्ध करना।			
	इकाई 2 - पाठ्यक्रम के रागों में रजाखानी गत (तोडों सहित) को लिपिबद्ध करना।			
	इकाई 3 - पाठ्यक्रम की तालों का परिचय एवं उनको लयकारी (दुगुन, तिगुन व चौगुन) सहित लिपिबद्ध करना।			
राग - मियां मल्हार, मालकौंस, मुल्तानी, तोडी, दरबारी, बसन्त, परज व शंकरा		**ताल - आडाचारताल, दीपचंदी, झूमरा, सूलताल व तीवरा**		
नोट - बी0ए0 प्रथम व द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम(प्रयोगात्मक सम्बन्धी) की पुनरावृत्ति।				